ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

सितम्बर 2019 (प्रथम)

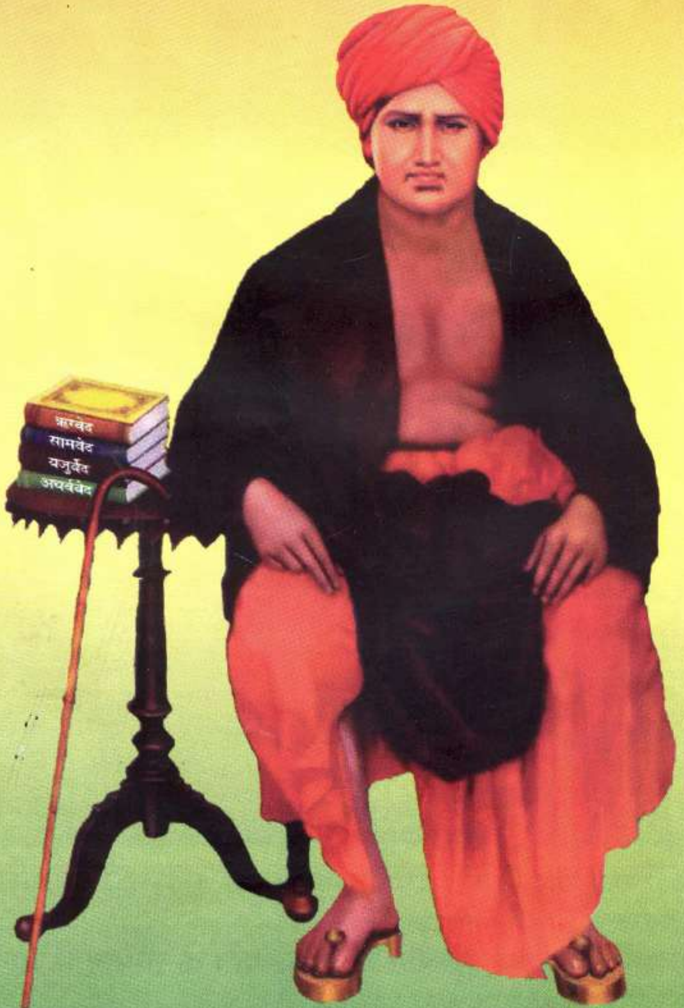

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

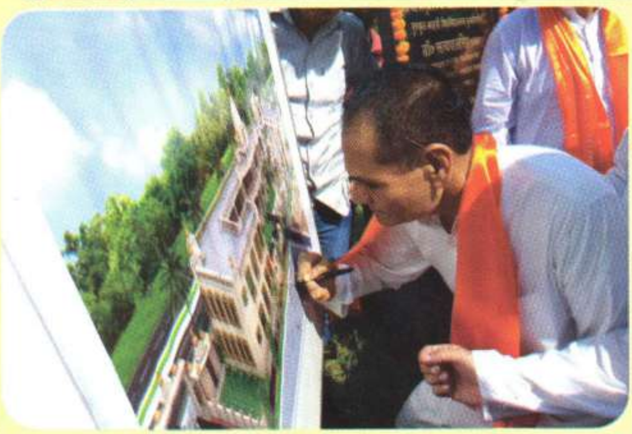

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपति व उपकुलपति के सम्मान में आयोजित समारोह में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य, सभा मंत्री श्री उमेद शर्मा, वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य व अन्य ।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 13

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

सितम्बर, 2019 (प्रथम)
1 से 15 सितम्बर, 2019 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष) 2
2. भगवान् जी! मैं तुमसे झगड़ना चाहता हूँ 3
3. प्रभु-स्तवन से ही उस पिता के समीप जाते हैं 5
4. आतंकवाद की खान–पाकिस्तान 6
5. गोरक्षा व गोपालन मानवीय कार्य होने से वैदिक धर्म का अंग है 7
6. अध्यापकों के लिए 9
7. भारत-विभाजन (1947) क्यों और कैसे? 10
8. प्रचलित तीनों वादों (विचारों) की संक्षिप्त व्याख्या 12
9. इन्द्रियों के व्रताचरण का महत्त्व व प्रेरक वचन 14
10. प्रेरणास्त्रोत भजन 15
11. समाचार-प्रभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। –सम्पादक

जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

जिज्ञासा-2. 'मोक्ष', 'मुक्ति' समानार्थक हैं या पर्यायवाची, जबकि 'आत्मा' को वेद, परमात्मा से पृथक्, अनादि, अनन्त कहता है। एक-एक आत्मा क्यों जीवन मुक्त अवस्था में देह धारण करेगी?

-रमेश बंसल, 111/6, बीसलपुर प्रोजेक्ट कॉलोनी, टोंक रोड, देवली-304804 (राज०)

समाधान-मोक्ष और मुक्ति दोनों ही शब्द समानार्थक हैं, दोनों का ही अर्थ छूटना है। दु:खों से नितान्त छूट जाने को मोक्ष अथवा मुक्ति कहते हैं। योगाभ्यास द्वारा यह संभव है। आत्मा निश्चित रूप से परमात्मा से पृथक् और अनादि है, किन्तु स्थान की दृष्टि से अनन्त नहीं है। जीवनमुक्त आत्मा देहधारण अपने पिछले कर्माशय के कारण करता है। इस शरीर के पश्चात् अगले शरीर प्राप्त न हों-इसके समस्त कर्माशय को जीवनमुक्त आत्मा नष्ट कर चुका होता है, किन्तु वर्तमान शरीर का कर्माशय नष्ट नहीं हुआ होता, वह तो इस शरीर के नष्ट होने पर ही नष्ट होता है, इसलिए जीवनमुक्त आत्मा इसको परमात्मा की व्यवस्था मानकर शरीर धारण किये रहता है। जब तक शरीर में रहता है, तब तक वह निरन्तर लोकोपकार करता रहता है और देहत्याग के पश्चात् परमात्मा के सान्निध्य मोक्ष में रहता है।

जिज्ञासा-3. मैं वर्षों से सुनता आ रहा हूँ कि मुक्ति का मार्ग बड़ा कठिन है। इस मार्ग पर कोई विरला ही चल सकता है। ऐसा पढ़ा भी है। मेरी समझ में अब तक नहीं आया कि ये कठिनता क्या है, मुक्ति का मार्ग कठिन कैसे है? आधुनिक धर्मगुरु इसको बहुत सरल कहते हैं। मार्गदर्शन की आशा है। **-अतुल सागर, मध्यप्रदेश**

समाधान-प्राय: आध्यात्मिक व्याख्यानों में मोक्ष की चर्चा होती है, इस चर्चा में मोक्ष कौन प्राप्त कर सकता है, कैसे प्राप्त कर सकता है, इसके साधन क्या हैं, मार्ग कैसा हो, कौन-सा हो, आदि बातें रखी जाती हैं। इन्हीं बातों के बीच मोक्ष मार्ग को बहुत कठिन भी बताया जाता है। आप इसी कठिनता को जानना चाहते हैं। इस विषय में हम कुछ विस्तार से लिखते हैं।

कोई मार्ग यदि सरल है तो यात्रा भी सरल हो जाती है और मार्ग ठीक नहीं है तो यात्रा भी कठिन हो जाती है। यात्रा केवल मार्ग सरल होने पर निर्भर नहीं करती, यात्रा तो यात्री पर भी निर्भर करती है। यदि यात्री कमजोर, रोगी, निरुत्साही और प्रमादी है तो वह ऋतु=सरल मार्ग पर भी यात्रा नहीं कर सकता और यदि यात्री बलवान्, स्वस्थ, उत्साही और उद्यमी है तो वह कठिन मार्ग से भी अपने गन्तव्य को प्राप्त कर लेगा।

आज बहुत से आधुनिक धर्मगुरु मतानुयायी जो कि मानसिक-शारीरिक बल से हीन, अस्वस्थ, निरुत्साही, प्रमादी हैं, यह दम्भ भरते हैं कि हम परम लक्ष्य तक पहुँच गये हैं। मुक्ति का मार्ग बड़ा सरल है। जो हमारा शिष्य बनेगा, उसको भी हम मुक्ति तक पहुँचा देंगे। उनका यह कथन मिथ्या प्रलाप मात्र है, क्योंकि शास्त्र कहता है-

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च
प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात्॥ (मुण्डकोपनिषद् 4/57)

यह आत्मा बलहीन अर्थात् शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक बल से हीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता, न प्रमादी को और न ही लक्ष्यहीन तप करने वाले को। जब हम इस शास्त्र वचन पर विचार करते हैं तो हमें लगता है कि इन मतानुयायी गुरुओं के पास वह वस्तु है ही नहीं कि जिसको परमलक्ष्य मोक्ष कहते हैं। वह तो वेदपथानुगामी ऋषियों के पास है। वैसे भी ऋषियों ने इस मार्ग को **'अणु: पन्था'**, **'क्षुरस्य धारा'** आदि विशेषणों से युक्त कहा है। अर्थात् मोक्ष मार्ग अत्यन्त सूक्ष्म है, छुरे की धार पर चलने के बराबर है। वह इसलिए है कि इस मार्ग में अपने आपको प्रत्येक क्षण सांसारिक आकर्षणों से रोके रखना होता है। अपनी प्रत्येक इन्द्रिय और उसके विषय को समझना, मन और मन में पड़े संस्कारों को जानना, उनको तनु-कमजोर करना, दग्धबीज करना, बुद्धि को जानना कि यह क्या वस्तु है, मेरे लिए यह कल्याणकारी वा अकल्याणकारी कैसे सिद्ध हो सकती है, यह देखना, विचारना बड़ा कठिन है। इसलिए मोक्ष मार्ग को कठिन कहा जाता है।

क्रमशः अगले अंक में....

भगवान् जी! मैं तुमसे झगड़ना चाहता हूँ

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

एक दिन मैं भगवान् जी के दरबार में पहुँचा। वहाँ पर खड़े दरबान ने मुझे रोकने का प्रयास किया। मैं तो पृथ्वीलोक

से आया था और सारे ढंग जानता था तो आप समझ गये होंगे कि मैं भगवान् जी के सामने प्रस्तुत हुआ और उन्हें जाकर अपना प्रार्थना-पत्र दिया जिसका शीर्षक था, "भगवान् जी! मैं आपसे लड़ना चाहता हूँ।" भगवान् जी मुस्करा दिए और कहने लगे, "आर्य जी! क्या बात है? आप मुझसे लड़ना क्यों चाहते हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "भगवान् जी! मैं प्रतिदिन प्रातःकाल आपकी पूजा-अर्चना करता हूँ। मैं सदैव इस मन्त्र को दोहराता हूँ-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

मैं प्रतिदिन यह मन्त्र बोलकर गिड़गिड़ाता हूँ, परन्तु एक आप हैं कि मेरे प्रार्थना-पत्र पर ध्यान ही नहीं देते। मैं तुम्हें माता, पिता, बन्धु, सखा कहता हूँ, तुम्हीं मेरी विद्या हो, तुम्ही मेरे धन हो, तुम ही मेरे सब कुछ हो, परन्तु आप मेरी ओर देखते भी नहीं। मैं पुनः-पुनः एक ही बात कहता हूँ कि मैं जन्म-जन्मान्तरों से नाना प्रकार की योनियों में भटक रहा हूँ। बार-बार जन्म लेता हूँ। बार-बार मृत्यु का शिकार होता हूँ। आप मेरी सुध क्यों नहीं लेते हो? आपकी कृपा से मुझे न जाने कितनी योनियों के पश्चात् यह मानव का शरीर मिला है। न जाने, फिर कब मिले? आप स्वयं कहते हैं कि मनुष्य योनि के अतिरिक्त जितनी भी योनियां हैं, सभी भोग योनियां हैं। केवल यह मनुष्य योनि ही भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है और किसी भी योनि में हमें कर्म करने का अधिकार नहीं है। वे सब योनियां परतन्त्र योनियां हैं, परन्तु यही एक मानव की योनि ऐसी है जो कर्म करने में स्वतन्त्र है। जब मेरी इस योनि में कर्म की स्वतन्त्रता है तो फिर आप मुझसे अच्छे कर्म करा लो, मेरा उद्धार कर दो, मुझे अपनी शरण में ले लो, परन्तु आप मेरी सुनते कहाँ हैं?

भगवान् जी मुस्कराये और कहने लगे, "प्रिय पुत्र! तुम पृथ्वीलोक से आये हो, तुम्हारे पृथ्वीलोक में तुम्हारे जन्म के पिता तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करते हैं, जब तुम्हें उनसे लेना होता है।" मैंने उत्तर दिया, "जब प्रार्थना करने पर भी मेरा जन्मदाता पिता मुझे टॉफी नहीं देता तो मैं पहले तो विभिन्न प्रकार की क्रियायें करके उनसे टॉफी मांगता हूँ, जब नहीं देते तो मैं पृथ्वी पर लेट जाता हूँ, चीखता हूँ, चिल्लाता हूँ। इतना ही नहीं मैं अपने कपड़े तक फाड़ देता हूँ। मेरी इन सारी क्रियाओं को देखकर मेरा इस जन्म का पिता मुझ पर दयालु हो जाता है और वह मुझे टॉफी दिला देता है। इसी प्रकार मैं भी आपके सामने कब से गिड़गिड़ा रहा हूँ? परन्तु आप हैं कि मेरी एक भी नहीं सुन रहे।"

भगवान् जी सोचने लगे और उन्होंने कहा, "आर्य जी! आज तुमने मुझसे झगड़ा करने का मन क्यों बनाया?" मैंने कहा, "मुझे पता है कि आप मेरे पिता है, ऋग्वेद मण्डल एक, सूक्त संख्या एक, मन्त्र संख्या 9 में कहा गया है-

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥

हे भगवान्! जैसे पिता अपने पुत्रों को अच्छी प्रकार पालन करके और उत्तम शिक्षा देकर उनको शुभ गुण और श्रेष्ठ कर्म करने योग्य बना देता है, वैसे ही आप मुझे शुभ गुण और शुभ कर्मों से सदैव युक्त कीजिये।"

अब भगवान् जी! आप ही बताइये कि मैं आपसे झगड़ा क्यों न करूँ? आप ही तो मेरा मार्गदर्शन कर सकते हैं और फिर भगवान् जी! एक बात और रहस्य की बताऊँ यदि मैं किसी और से झगड़ता तो वह मेरी हड्डी-पसली तोड़ देता, परन्तु आप ही तो मेरे पिता हैं, फिर आप मेरी हानि क्यों करने लगेंगे। इसलिए आप से ही झगड़ा करने पर मुझे हड्डी-पसली तुड़वाने का भी कोई भय नहीं है। दूसरी बात यह है कि आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मेरे साथ झगड़ा नहीं कर सकते। फिर झगड़ा करने के लिए शरीर चाहिये, परन्तु आपने तो यजुर्वेद के 40/8 मन्त्र में कहा है कि आप शरीर रहित हैं।

"**स पर्यगात् शुक्रं, अकायम्**" आप शरीर-रहित हैं, इसलिए मेरे साथ आप झगड़ा भी नहीं कर सकते। भगवान् ने उत्तर दिया, "आर्य जी! बड़े चतुर हो मेरे इस अकायम् भाव का लाभ उठाना चाह रहे हो, यह तो उचित नीति नहीं है।" मैंने भगवान् जी से कहा, "इतना ही नहीं आप केवल '**अकायम्**' ही नहीं '**निराकार**' भी हैं और झगड़ा करने के

लिए साकार शरीर की आवश्यकता होती है।''

भगवान् जी कहने लगे, ''आर्य जी! यह ठीक है कि मैं निराकार हूँ, यदि साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। मेरे निराकार विषय में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखा है और यदि मैं व्यापक न होता, तो सर्वज्ञादि गुण भी न हो सकते, क्योंकि परिमित वस्तु में गुण-कर्म-स्वभाव भी परिमित होते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृषा और रोगदोष, छेदन-भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। इससे यह निश्चित है कि मैं निराकार हूँ और जो साकार होता, तो उसके आकार बनाने वाला दूसरा होना चाहिये क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है, उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य चाहिये। यदि तुम यह कहो कि मैंने अपना शरीर बना लिया, तो यही सिद्ध हुआ कि शरीर बनने से पूर्व निराकार था। इसलिए मैं शरीर धारण न करता हुआ निराकार होता हुआ सब जगत् को सूक्ष्म आकार से स्थूलाकार बनाता हूँ।''

भगवान् जी ने पुनः कहना प्रारम्भ कर दिया, ''आर्य जी! तुम मुझे नहीं जानते, मैं सर्वशक्तिमान् हूँ, मैं तुम्हारा बहुत कुछ बिगाड़ सकता हूँ।'' मैंने कहा भगवान् जी! सर्वशक्तिमान् का इतना अर्थ है कि आपको काम करने के लिए दूसरे का सहाय नहीं लेना पड़ता, आप स्वसामर्थ्य ही से सब काम पूरा कर लेते हैं, परन्तु आप सर्वशक्तिमान् हैं तो क्या आप अपने को मार सकते हैं, क्या आप दूसरा भगवान् बना सकते हैं, क्या आप स्वयं अविद्वान् बन सकते हैं? क्या आप चोरी आदि पाप कर सकते हैं? क्या आप दुःखी हो सकते हैं? नहीं, आप ये सब काम आप नहीं कर सकते हैं? भगवान् जी! ये सब काम आपके गुण, कर्म, स्वभाव के विरुद्ध हैं इसलिए आप मुझे सर्वशक्तिमान होने का भय मत दिखाइये।'' भगवान् जी ने कहा, ''आर्य जी! मेरे द्वारा रचित वेद के प्रमाण देकर तथा मेरे प्रिय शिष्य महर्षि दयानन्द जी की पुस्तक सत्यार्थप्रकाश का उदाहरण देकर तुम मुझे चुप कराने का प्रयास कर रहे हो, यह बात तो ठीक नहीं है।''

मैंने कहा, ''भगवान् जी! मैं आपकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना इसलिए करना चाहता हूँ कि आप मेरे पाप क्षमा कर देंगे।'' भगवान् जी ने उत्तर दिया, ''कैसी बच्चों जैसी बातें करते हो। मेरे न्याय में तो यह है-'**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' अवश्य किए हुये कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। इसलिए मैं तुम्हारे पाप क्षमा नहीं करूँगा। मैं अपना नियम छोड़ स्तुति, प्रार्थना करने वाले का पाप नहीं छुड़ाता।'' मैंने कहा, ''भगवन्! मैं फिर क्यों आपकी स्तुति, प्रार्थना करूँ?'' भगवान् जी ने कहा, ''आर्य जी! स्तुति से मुझ में प्रीति, मेरे गुण-कर्म-स्वभाव से तुम्हारे गुण-कर्म-स्वभाव का सुधरना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और साहस की प्राप्ति होगी। उपासना से मुझसे मेल होगा और मेरा साक्षात्कार तुम कर सकोगे।''

मैंने कहा, ''भगवान् जी! इनको स्पष्ट करके समझाओ।'' भगवान् जी कहने लगे, ''आर्य जी! मेरी स्तुति, प्रार्थना, उपासना का क्या फल है, यदि तुम इसकी सटीक और सुन्दर व्याख्या जानना चाहते हो तो मैं पुनः कह रहा हूँ कि तुम पृथ्वीलोक जाकर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में (ईश्वर विषय) नामक अंशों का अध्ययन करो, तुम्हारे सारे भ्रम टूट जायेंगे, क्योंकि उसमें ऋषि दयानन्द जी ने स्तुति में यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 8वें मंत्र, प्रार्थना में यजुर्वेद के 16वें अध्याय का 15वां मंत्र, उन्नीसवें अध्याय के 9वें मंत्र, बत्तीसवें अध्याय के 14वें मंत्र, 34वें अध्याय के 1 से 6 मंत्र, चालीसवें अध्याय का दूसरा तथा 12वां मंत्र, चालीसवें अध्याय का 16वां मंत्र एवं शतपथ ब्राह्मण का (14.3.1.30) का वचन दिया है और उपासना में मैत्रायणी उपनिषद् (4.4.9), पातञ्जल योगशास्त्र साधन पाद सूत्र संख्या 30 एवं 32 दिए हैं। इनके फल जानकर तुम मेरे प्रति प्रीति करनी आरम्भ कर दोगे।'' महर्षि दयानन्द जी ने इनका फल इस प्रकार वर्णन किया है।

''जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे मेरे समीप प्राप्त होने से सब दोष, दुःख छूटकर मेरे गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार तुझ जीवात्म के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए मेरी स्तुति, प्रार्थना, उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे इसका फल पृथक् होगा, परन्तु तुम्हारी आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि तुम पर्वत के समान दुःख प्राप्त करने पर भी घबराओगे नहीं और सबको सहन कर सकोगे। क्या यह छोटी बात है? और जो मेरी स्तुति, प्रार्थना, उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है, क्योंकि मैंने इस जगत् के पदार्थ जीवों के सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना, मुझ को ही न मानना कृतघ्नता और मूर्खता से कम नहीं है।''

क्रमशः अगले अंक में......

प्रभु स्तवन से ही उस पिता के समीप जाते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, 1/61, रामप्रस्थ ग्रीन, वैशाली जिला गाजियाबाद (उ०प्र०) मो० 9718528068

परमपिता परमात्मा की गोदी में हमें वही सुख मिलता है, जो सुख माता की गोदी में मिलता है। इस कारण वह प्रभु हमारी माता है। हम ऐसे प्रभु के निकट रहना चाहते हैं किन्तु यह निकटता हम तब ही पा सकते हैं जब ह॰ उस पिता का निरन्तर स्तवन करते हैं, कीर्तन करते हैं। इस बात को इस मन्त्र में बड़े ही सुन्दर ढंग से इस प्रकार समझाया गया है-**देवयन्तोयथामतिमच्छाविददवसुंगिरः। महा-मनूषतश्रुतम्॥** (ऋ० 1.6.6) इस मंत्र में तीन बातों की ओर संकेत करते हुए बताया गया है कि-

1. प्रभु को पाने की कामना-जो व्यक्ति संयमित जीवन चलाते हुए ज्ञान के प्रकाश को देख लेते हैं, ऐसे व्यक्ति उस पिता को लक्ष्य करते हुए उसका स्तवन करते हैं, उसकी प्रार्थना करते हैं, उसका कीर्तन करते हैं, उसकी निकटता को पाते हैं, जो पिता यथार्थ ज्ञान वाले, वास्तविक ज्ञान वाले, सत्य ज्ञान वाले सब वस्तुओं, जो निवास के लिए आवश्यक होते हैं, ऐसे वस्तुओं को प्राप्त कराने वाले सबसे महान्, सर्वज्ञत्व अर्थात् सब स्थानों पर विद्यमान होने वाले गुणों से युक्त तथा इन गुणों के कारण सर्वत्र प्रसिद्ध उस पिता का स्तवन करते हैं। ऐसे व्यक्ति उस परम प्रभु की प्रार्थना करते हैं, कीर्तन करते हैं तथा उसे पाने की कामना करते हैं, इच्छा रखते हैं।

2. प्रभु के गुणगान से उसकी निकटता-ऊपर वर्णित विधि से उस पिता के जिस-जिस गुण को सम्मुख रखते हुए हम उसका स्तवन करते हैं, उसको स्मरण करते हैं, वह-वह गुण धीरे-धीरे हमारे अन्दर भी आता चला जाता है। हम उसके जितने अधिक गुणों के आधार पर उसे स्मरण करते हैं, उतने ही अधिक गुणों को हम प्राप्त करते चले जाते हैं। अतः हम शनैः-शनैः उन गुणों को धारण करते हुए निरन्तर दिव्य गुणों को अपनाते हुए, ग्रहण करते हुए आगे बढ़ते चले जाते हैं। इस प्रकार हम उस देव के, उस पिता के, उस प्रभु के अधिक से अधिक निकट होते चले जाते हैं।

3. पुरुषार्थी बनें-इस प्रकार प्रभु के गुणों के आधार पर उसका स्तवन करने से, उसकी प्रार्थना करने से हम जीवन के विभिन्न प्रकार के अनुभव कर पाते हैं। हम सर्वप्रथम तो यह अनुभव करते हैं कि वह प्रभु हमें हमारे निवास के लिए वह सब वस्तुएं प्राप्त कराते हैं, जिनकी हमें आवश्यकता होती है, किन्तु इसके लिए हमें निरन्तर पुरुषार्थ करने की आवश्यकता होती है। इसलिए हमें पुरुषार्थ करने की आवश्यकता होती है। हम पुरुषार्थ से भी पीछे न हटें, पुरुषार्थ में कभी कमी न आने दें।

4. महान् प्रभु सर्वशक्तिमान् है-प्रभु की महानता को हम देखते हैं। वह प्रभु अत्यन्त महान् है। जो व्यक्ति महान् होता है, उसकी महानता को देखने की एक विशेष विधि होती है, उसकी बुद्धि तथा उस द्वारा किए जा रहे कार्य ही उसकी महानता का ज्ञान देते हैं। अतः प्रभु की महानता का भी उसकी कृति से ही पता लगता है। हम प्रभु की कृति को देखते हैं तथा देखते ही चले जाते हैं। हम जितना जितना उस प्रभु का चिन्तन करते हैं, उसका स्मरण करते हैं तथा जितना ही उस प्रभु की बनाई गई इस सृष्टि में उपलब्ध तत्त्वों का, कार्यों का विचार करते हैं, उतना ही हम उस प्रभु को महान् रूप से देखते चले जाते हैं। जो कुछ उस प्रभु ने बनाया है, वैसा कोई अन्य नहीं कर सकता, यह ही उसकी महानता का प्रतीक होता है। इस प्रकार से उसकी महानता को देखते हुए हमें यह अनुभव होता है कि वह प्रभु सर्वज्ञ है।

हम जहाँ भी जाते हैं, हमें उसकी कृति दिखाई देती है। इस कारण हम अनुभव करते हैं कि वह प्रभु न केवल सर्वज्ञ होने से सब स्थान पर विराजमान ही दिखाई देता है बल्कि वह सर्वशक्तिमान् भी है, सब प्रकार की शक्तियां उस प्रभु में हैं, यह आभास भी हमें मिलता है।

इस प्रकार का आभास होने से हम उस पिता के और भी अधिक निकट होते चले जाते हैं, अब तो यह अवस्था होती है कि हम उस पिता को इस सृष्टि के कण-कण में देखने लगते हैं तथा सर्वत्र उसे देखने लगते हैं। सर्वत्र उस पिता का निवास देखने से हम अपने हृदय में भी उस पिता का निवास मानने को बाध्य होते हैं। उस पिता का प्रकाश हम अपने हृदय में अनुभव करते हैं।

आतंकवाद की खान—पाकिस्तान

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

पाकिस्तान आज विश्व में आतंकवाद के स्रोत के रूप में जाना जाता है। वहाँ आतंकवादियों के स्थान-स्थान पर

शिविर लगाकर दुनिया में दहशतगर्दी फैलाने हेतु प्रशिक्षण दिये जाते हैं। वहाँ से आतंकवादी प्रशिक्षण लेकर कश्मीर में भेजे जाते रहे हैं। अनुच्छेद 370 हटने के बाद तो पाकिस्तान की बौखलाहट तथा छटपटाहट और अधिक बढ़ गयी। दुनिया के देशों में भारत के विरोध में अफवाहें फैला रहा है।

पाकिस्तान में आज पीने को शुद्ध पानी नहीं है। आलू, टमाटर व अन्य सब्जियों के मूल्य आसमान छू रहे हैं। वहाँ जनता भुखमरी से त्रस्त है। बेरोजगारी व अशिक्षा बढ़ रही है, उसकी चिन्ता पाकिस्तान को नहीं, बल्कि वह केवल आतंकवाद को कैसे बढ़ाया जाये इस ओर ध्यान दे रहा है। पाकिस्तानी राजनेता व सरकार तथा सेना आतंकवाद के चंगुल में फँसे हुए हैं, क्योंकि जैसी मानसिकता होती है, मनुष्य उस ओर ही जाता है। जब वहाँ अच्छी शिक्षा नहीं, श्रेष्ठता नहीं, विद्वान् नहीं, वहाँ का गौरवशाली कोई इतिहास ही नहीं। उनके पूर्वजों का मानवता व परोपकार जैसा कोई योगदान नहीं तो वहाँ अच्छे आदमी व महापुरुष कैसे पैदा हो सकते हैं अर्थात् कदापि नहीं अपितु ऐसे गन्दे कुत्सित वातावरण में आतंकवादी ही पैदा हो सकते हैं, जैसा कि हो रहा है।

पाकिस्तान के कोर्ट ने तो दुर्दान्त आतंकवादी मुम्बई नरसंहार के मास्टर माइण्ड हाफिज सईद को पार्टी बनाने व नेता बनने तथा चुनाव में भाग लेने की अनुमति भी दे दी है। भारत का विरोध करने वाले कश्मीर के अलगाववादी जो सन् 2015 में गिरफ्तार कर लिया गया था उस मसरत आलम को हाफिज सईद ने शाबाशी दी है। स्पष्ट है पाकिस्तान आतंकवादी कश्मीर घाटी में अलगाववाद को बढ़ा भारत विरोधी आग लगा रहे थे। जो कश्मीर घाटी सुन्दर दर्शनीय तथा शान्तप्रिय थी उसमें पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद ने हवा में विष घोलने का काम किया। वहाँ के अमन-चैन को लूटा गया।

घाटी में अलगाववाद की भावना भड़काने में सीधे पाकिस्तान का हाथ था। अभी जिंदा पकड़े आतंकवादियों ने स्पष्ट बताया है और पाकिस्तान का गन्दा चेहरा सामने आया है। आतंकवादी घटनाएं, पुलवामा जैसी घटना पाकिस्तान की काली करतूत थी। पाकिस्तान शान्ति से रहने वाला देश नहीं है। आतंकवाद उसके खून में है। यही उसे अपना धर्म लगता है। इसी आदत से पाकिस्तान को भुखमरी, बेरोजगारी के कगार पर पहुँचा दिया है। समाज में भी ऐसे लोगों के घर बर्बाद होते देखे जाते हैं जो दूसरों की धन-दौलत पर कुदृष्टि डालते हैं उनका मन व हृदय दूषित ही रहता है। मन में कुछ और वाणी में कुछ होता है, वहीं अवगुण पाकिस्तान का है। अपने घर की स्थिति तो संभाल नहीं रहा पड़ोसी देश भारत के कश्मीर पर उसकी नीयत खराब हो रही है।

दुर्योधन को समझाया गया उसकी समझ में नहीं आया आखिर में महाभारत युद्ध हुआ। अन्त में क्षति तो बहुत हुई परन्तु दुष्टता का भी अन्त हो गया। दुर्योधन व उसकी सेना मारी गई। ऐसे ही रावण की स्थिति थी जब यज्ञों में विध्वंस करने लगा आतंक मचाने लगा, सीता का भी अपहरण कर लिया। मनाने व समझाने पर भी नहीं माना। श्रीराम ने उस पर चढ़ाई कर दी। रावण की हार हुई और रावण व उसकी सेना मारी गई, राम की जीत हुई।

पाकिस्तान का भी वही हाल है पाकिस्तान की करतूत के कारण बांग्ला देश बना, कारगिल में हार हुई। लालबहादुर शास्त्री जी के समय हमारी सेनाएँ लाहौर तथा अन्दर जा चुकी थीं। अब भी सर्जिकल स्ट्राइक ने पाकिस्तान का मुंह तोड़ दिया। सबसे बड़ी शिकस्त उसकी आर्थिक स्थिति है जो आज डांवाडोल हो रही है और आज पाकिस्तान की विश्व में कोई इज्जत नहीं है, अलग-थलग पड़ गया है। आतंकवादी देश घोषित हो चुका है, यह बहुत बड़ी बात है। विश्व स्तर पर उसका कोई मान-सम्मान नहीं है। अनुच्छेद 370 हटाना तो भारत का अन्दरुनी मामला है, पाकिस्तान बेवजह बौखला रहा है। यदि पाकिस्तान अपने राज्य लाहौर, करांची, इस्लामाबाद, रावलपिण्डी आदि में

क्रमशः पृष्ठ 13 पर......

गोरक्षा व गोपालन मानवीय कार्य होने से वैदिक धर्म का अंग है

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

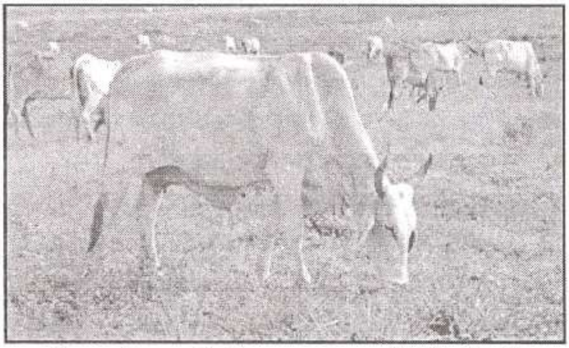

मनुष्य का कर्तव्य '**जियो और जीने दो**' सिद्धान्त का पालन करना है। कोई मनुष्य यह नहीं चाहता दूसरा कोई मनुष्य उसके प्रति हिंसा का व्यवहार करे। अतः उसका भी यह कर्तव्य बनता है कि वह भी किसी मनुष्य या इतर प्राणी के प्रति हिंसा का व्यवहार न करे। हिंसा से मनुष्य सहित अन्य सभी प्राणियों को दुःख व पीड़ा होती है। मनुष्य तो दुःख में रो सकता है, अपनों को अपनी व्यथा बता सकता है परन्तु मूक प्राणी तो अपनी बात किसी को कह भी नहीं सकते। हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनको मनुष्यों द्वारा की जाने वाली हिंसा से कितना दुःख व पीड़ा होती होगी। मनुष्य को यदि कांटा भी चुभ जाता है तो वह दुःखी व व्याकुल हो जाता है। यदि हम किसी के गले पर शस्त्र प्रहार कर मांसाहार व ऐसे किसी प्रयोजन के लिए उसके प्राणहरण का कार्य करें या करायें, तो यह अमानवीय एवं घोर क्रूर कृत्य होता है। पशु को मारना, मरवाना, उनको अकारण कष्ट देना व उनकी हत्या में सहायक होने सहित उन पशुओं से अपने मांसाहार के प्रयोजन को सिद्ध करना घोर अमानवीय एवं निन्दनीय कार्य हैं। यह अधर्म एवं पाप कर्म है जिसका फल मनुष्य को अपनी मृत्यु के बाद पशु व पक्षी आदि योनियों में से किसी एक में जन्म लेकर भोगना पड़ता है।

वैदिक सिद्धान्त है कि मनुष्य जो भी शुभ व अशुभ अथवा पुण्य व पाप कर्म करता है उसके फल उसको अवश्य ही भोगने पड़ते हैं। पशुहत्या करना व हमारे किसी निमित्त से कोई अन्य मनुष्य करे, तो हम उसमें समान रूप से दोषी व अपराधी होते हैं। हम यह भूल रहे होते हैं कि यह संसार किसी सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान सत्ता से चल रहा है। वह सत्ता इस संसार की स्वामी, मालिक तथा न्यायाधीश है। उस सत्ता परमात्मा ने जीवों को उनके पूर्वजन्मों के कर्मानुसार ही यह मनुष्य आदि जन्म दिया गया है। इस जन्म में हम पूर्वजन्म के किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल भी भोगते हैं और कुछ इस जन्म और कुछ परजन्म को सुखी व उन्नत बनाने के लिये नये कर्म भी करते हैं। परमात्मा सभी जीवों की आत्माओं के भीतर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी रूप से साक्षी रूप में निवास कर रहा है। किसी जीव व प्राणी का कोई कर्म परमात्मा की दृष्टि से बचता नहीं है। परमात्मा की व्यवस्था ऐसी है कि कोई भी मनुष्य बिना भोगे अपने कर्मों से मुक्त नहीं हो सकता। कोई ऐसा मत व सम्प्रदाय नहीं है जिसकी शरण में जाने से हमारे किये हुए पाप कर्म क्षमा हो सकते हों। यदि कोई ऐसा कहता है तो वह प्रमाणहीन होने से असत्य कहता है।

मनुष्य का कर्तव्य है कि वह जीवन में ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करे और कर्म-फल व्यवस्था को जानकर अपने जीवन, आचरण व दिनचर्या को उसके अनुरूप बनाये। ऐसा करके ही मनुष्य असत् कर्मों का त्याग कर तथा सत् कर्मों को धारण कर दुःखों से बच सकता है और परजन्म में भी उन्नति व सुखों को प्राप्त हो सकता है। यही कारण था व है कि धर्मात्मा व विवेकशील मनुष्य शुभ, पुण्य व धर्मानुकूल कर्मों को करते हैं और सुख व सन्तोष का अनुभव करते हुए दीर्घायु का भोग करते हैं। वेदों में भी परमात्मा ने सदाचरण व धर्माचरण की ही आज्ञा दी है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का दूसरा मन्त्र '**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः**' कहकर बताया गया है कि मनुष्य वेद विहित कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। हमें वेद विहित-कर्म ही करने हैं तथा वेद-निषिद्ध कर्मों का त्याग करना है। ऐसा करके ही हम इस जन्म व परजन्म में सुखी हो सकते हैं। यदि हमने मांसाहार किया अथवा भ्रष्टाचार से धन कमा भी लिया तो हम कुछ दिन, युवावस्था में ही, सुख भोग कर सकते हैं। वृद्धावस्था में तो रोग आदि व परिवार में कुछ दुःखद घटनाओं, पत्नी व पुत्र आदि का वियोग होने पर शेष जीवन

दुःख में ही बीतता है। इसके अतिरिक्त भी यदि हमारे बुरे कर्मों की जानकारी सरकार के न्याय विभाग तक पहुंच गई तो फिर जांच व न्याय व्यवस्था में फंसकर सुख काफूर हो जायेंगे और मृत्यु पर्यन्त हमारा अपयश, तनाव एवं दुःखों में ही व्यतीत होगा। ऐसे व्यक्तियों को देख कर लोग कहते हैं कि देखो! वह चोर जा रहा है। अतः मनुष्य को सभी पहलुओं पर विचार कर सद्कर्मों को ही करना चाहिये। इसी से सुख व चैन का जीवन प्राप्त होता है।

मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिये अन्न, दुग्ध, फल व ऐसे ही अनेक पदार्थों की आवश्यकता होती है। दुग्धधारी पशुओं में मुख्यतः गाय, बकरी, भैंस आदि पशु आते हैं। गाय प्रायः संसार के सभी देशों में पायी जाती है। गाय का दुग्ध मनुष्य के लिये सर्वोत्तम है। देशी गाय का दुग्ध प्रायः मां के दुग्ध के समान ही होता है। इस दुग्ध में बच्चे व बच्चों को पूर्ण भोजन व पौष्टिक तत्त्व प्रदान करने की पूर्ण सामर्थ्य होती है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि यदि मनुष्य केवल दुग्धपान ही करे तो भी उसका शरीर जीर्ण व दुर्बल नहीं होता। वह स्वस्थ रहता है। उसकी बुद्धि की क्षमता अधिक होती है। अतः जिन पशुओं से हमें सीधा लाभ प्राप्त हो रहा है उनके प्रति हमारा भी कर्तव्य है कि हम उनको अच्छा वातावरण जिसमें अभय व प्रेम हो, देना चाहिये। ऐसा करके हम पशुओं के प्रति कोई अहसान नहीं करते अपितु यह हमारा कर्तव्य बनता है। जो मनुष्य किसी से सेवा व सुख प्राप्त करता है तो वह उसका ऋणी होता है। इस प्रकार से हम उन सभी दुग्धधारी पशुओं व कृषकों के ऋणी होते हैं जो परिश्रम करके अन्न, दुग्ध व फल आदि उत्पन्न करते व हमें पहुंचाते हैं। इसके विपरीत पशुओं का पालन न करना अथवा उनका मांस खाना अमानवीय एवं ईश्वर की आज्ञा व अपेक्षाओं को भंग करने वाला कार्य होता है जिसका दण्ड परमात्मा की व्यवस्था से मनुष्य को मिलता है। हमारे अस्पतालों में जो रोगी दिखाई देते हैं उनमें से अधिकांश अपने कर्मों के कारण ही दुःख उठाते हैं। यह कर्म इस जन्म व पूर्वजन्म दोनों जन्मों के होते हैं। इससे बचने के लिये हमें पूर्ण शाकाहार बनना होगा। इतना ही नहीं हमें पशुओं की रक्षा भी करनी है और उनका पालन भी करना है। ऐसा करके हम अपना यह जीवन सार्थक कर सकते हैं और अपने भावी व परजन्म के जीवन को भी सुधार कर सकते हैं।

मनुष्य के शरीर में एक जीवात्मा होता है जो चेतन पदार्थ है। चेतन पदार्थ के मुख्य गुण ज्ञान प्राप्ति व कर्म होते हैं। मनुष्य ज्ञान अर्जित कर सकता है और ज्ञान के अनुरूप अथवा अज्ञान के वशीभूत होकर अन्धविश्वासों आदि का आचरण कर सकता है। शास्त्र मनुष्य को सद्ज्ञान प्राप्त करने, जो वेदों व वेदानुकूल ग्रन्थों यथा सत्यार्थप्रकाश, विशुद्ध मनुस्मृति आदि से प्राप्त होता है, की प्रेरणा करते हैं और वेद के अनुसार ही सदाचरण पर बल देते हैं। ऐसा करने से मनुष्य अशुभ कर्मों से बचा रहता है और इनके दुःखरूपी परिणाम व फल भी उसे प्राप्त नहीं होते। कोई मनुष्य दुःख नहीं चाहता, अतः दुःख से बचने के लिये सदाचरण करना ही होगा। इस समस्त संसार और सभी प्राणियों को परमात्मा ने बनाया है। यह सब हमारे परिवार के अंग हैं। हमें गाय अथवा किसी भी प्राणी के प्रति हिंसा नहीं करनी है। इसके विपरीत हमें लाभकारी प्राणियों का पालन व रक्षा करनी है। यही मनुष्य धर्म है। जो इस धर्म के विरुद्ध बातें हैं, उनका हमें त्याग कर देना चाहिये। शास्त्रों में अहिंसा व प्राणियों की रक्षा को धर्म कहा गया है। अतः इस सिद्धान्त को हृदय में स्थिर कर हमें गो आदि लाभकारी पशुओं की रक्षा व पालन दोनों करना है। इतिहास को पढ़ने पर ज्ञात होता है कि योगेश्वर कृष्ण भी गोपालक व गोरक्षक थे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पूर्व महाराज रघु आदि भी गोरक्षक थे। इन महापुरुषों में जो अद्भुत ज्ञान व शक्तियां थीं, उन्नत बुद्धि थी और उनके जो अलौकिकता से युक्त कार्य थे, उसमें अनेक कारणों के अतिरिक्त एक कारण उनका गोरक्षा, गोपालन सहित गोदुग्ध का पान करना भी था।

गोरक्षा व गोपालन के महत्त्व पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने 'गो की पुकार' नाम से एक अति महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक ऋषि दयानन्द की गोकरुणानिधि पुस्तक की व्याख्या है। पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी ने भी 'गोहत्या राष्ट्रहत्या' नाम से एक पुस्तक लिखी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं लाभकारी है। आर्य विद्वान् डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने भी 'गोरक्षा-राष्ट्ररक्षा' नाम से एक पुस्तक लिखी है जिसमें महत्त्वपूर्ण जानकारियां हैं। इन पुस्तकों को पढ़कर गोदुग्ध, गोरक्षा व गोपालन का महत्त्व विदित हो जाता है। गोपालन व गोदुग्ध के सेवन से मनुष्य स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घायु होता है और उसके बहुत से रोग, साध्य एवं असाध्य, दूर होते हैं। अतः सभी को गोरक्षा के कार्य में अपनी भूमिका निभानी चाहिये। इससे हमारा यह जीवन और परजन्म भी सुखी व कल्याण को प्राप्त होंगे।

अध्यापकों के लिए

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

5 सितंबर को अध्यापक दिवस मनाया गया। ऐसे दिवस कर्त्तव्य बोध का विशेष चिन्तन करने का सुअवसर देते हैं। समाज को सुसन्तति सौंपने में माता-पिता और

अध्यापक का ही योगदान रहता है। जहाँ विद्वान्, धार्मिक, पुरुषार्थी अध्यापक होते हैं, वहाँ विद्या, धर्म और उत्तमाचार की वृद्धि होकर प्रतिदिन आनन्द ही बढ़ता रहता है। जहाँ मूर्ख, अधार्मिक, आलसी अध्यापक होते हैं, वहाँ अविद्या, अधर्म, असभ्यता, दुःख बढ़ता है, ऋषियों व नीतिकारों का यही मत है। केवल अध्यापक की पात्र परीक्षा पास करने से या पद पर प्रतिष्ठित होने से ही कोई अध्यापक नहीं बन जाता, अध्यापक बनता है, कर्त्तव्य निर्वहन से।

अध्यापक का कर्त्तव्य बालक को विभिन्न प्रकार से पाठ्य-विषयों को पूरे पुरुषार्थ से पढ़ाने के साथ-साथ अपने आचरण व उपदेश से उसे धार्मिक बनाना है। जब भी मैं अंग्रेजी में 'An Ideal Teacher' का Paragraph लिखता या लिखाता था तो मुझे उसमें सबसे अच्छी यह पंक्ति लगती थी-'He takespain to teach his students.' यह वाक्य मेरे हृदय को छू जाता था। हमने वास्तव में वह समय देखा जब अध्यापक कक्षा और विद्यालय के समय बाद भी बालकों को मनोयोग से पढ़ाते थे, बिना कोई अतिरिक्त शुल्क लिए। अब अध्यापकों को विद्यार्थियों की वह चिंता कहाँ?

विद्यार्थियों के हितार्थ चिंतन न करने वाला अध्यापक नए-नए ढंग से विद्यार्थियों को विषय सम्बन्धी ज्ञान देने में असफल रहता है तथा पढ़ने-पढ़ाने में रस नहीं रहता। अपने अध्यापन के आरम्भिक दिनों में करनाल-हांसी रोड पर स्थित 'विद्योत्मा' विद्यालय में मैं अंग्रेजी पढ़ाता था। पहले स्वयं तैयारी करके, अपने वाक्य बनाकर, पुस्तकों में दिए अभ्यास की भी मदद लेकर विद्यार्थियों को English Grammar पढ़ाता था। विभिन्न विभागों (Tenses, Modals, Clauses, Conjunctions, Infinitives) के पढ़ाने-समझाने के लिए नए-नए ढंग सामने आने लगे। वहीं से पढ़ा हुआ पाढ़ा (करनाल) गांव का एक विद्यार्थी आनन्द पिछले दिनों मिला। उसने बताया कि वह I.E.S. की परीक्षा पास कर सरकारी सेवा में है। उसने बड़े आदर से कहा कि गुरुजी जो Grammar आपने पढ़ाई वह फिर नहीं पढ़ने को मिली, उसे हम अब भी याद करते हैं। ऐसे प्रसंगों से जो आत्मिक सुख मिलता है, उसे एक आदर्श अध्यापक ही अनुभव कर सकता है। उस समय मैं आर्यसमाज के साहित्य का भी खूब अध्ययन करके विद्यार्थियों को उसके रंग में रंगता था। इसी प्रयास में वहीं पास में ही रहने वाले आर्यसमाज इतिहास शिरोमणि श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' के बड़े भाई स्वनामधन्य श्री यशपाल जी मुझसे मिले व बहुत स्नेह, प्रोत्साहन दिया।

गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक) में सेवा देते हुए 8वीं से 12वीं तक के कुछ ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ाने में सफल रहा, जिन्हें अंग्रेजी के शब्द स्वयं बोलकर बुलवाने पड़ते थे। इनमें से कुछ बालक ऐसे निपुण हो जाते थे जो पूरा पाठ्यक्रम कण्ठस्थ कर लेते थे। जब ये बालक पूज्य आचार्य बलदेव जी का आशीर्वाद लेने सभा में आते तो श्री सत्यवान जी सह-कार्यालयाधीक्षक व श्री शेरसिंह कार्यालयाधीक्षक को पाठ्यक्रम में कहीं से भी कुछ पूछने पर सुना देते थे। एक अनाथ बालक फारुल मल्हौत्रा आज ऐसा प्रयास करके विदेश में धन व यश कमा रहा है। मुझे कुछ साथियों ने बताया कि 'अध्यापक दिवस' पर उसने विदेश से 'Face-book' पर आपके प्रति कृतज्ञता भेजी है। एक मुस्लिम परिवार का लड़का नवाब जिससे कुश्ती में पांचवीं कक्षा से ही अभ्यास करवाया, वह आज भारतीय खेल प्राधिकरण, चंडीगढ़ में प्रतिष्ठित पहलवान बन चुका है। जब भी मिलता है उसकी मूक कृतज्ञता से ही बड़ा सन्तोष मिलता है।

वर्तमान में आर्य बाल भारती विद्यालय में सेवा दे रहा हूँ। वहाँ इसी वर्ष 12वीं कक्षा में नियमित आने वाले एक विद्यार्थी यूनीक मलिक ने NEET की परीक्षा बेहतर अंकों

शेष पृष्ठ 13 पर....

भारत-विभाजन (1947) क्यों और कैसे?

❑ आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत), दिल्ली सरकार

भारत में मुगल सत्ता के कमजोर होते ही अंग्रेजों ने देश की फूट को देखकर एक-एक कर सभी राज्यों को जीत कर अपने आधीन कर लिया। जिन राजाओं का राज्य अंग्रेजों ने छीना था, उनके मन में तो अंग्रेजों के प्रति रोष था ही, साधारण जनता भी अंग्रेजों के व्यवहार से असंतुष्ट थी। इसी का परिणाम 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम था। 1857 के इस स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दू तथा मुसलमान कन्धे से कन्धा मिलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। यदि उस समय कुछ राजा अंग्रेजों का साथ न देते तो अंग्रेजों को भारत से जान बचाकर भागना पड़ता। किन्तु शोक कि उस संग्राम में सिक्खों, गोरखों ने अंग्रेजों का साथ दिया तथा अंग्रेज विजयी हुए। अंग्रेजों का भारत पर पूर्ण रूप से अधिकार हो गया। क्रान्तिकारियों तथा साधारण जनता पर भयंकर अत्याचार किये गये। लाखों लोगों की हत्याएँ हुईं। लाखों को फांसी पर लटका दिया तथा लोगों के प्राणान्त के बाद भी उन्हें उसी तरह लटका रहने दिया, जिससे लोगों पर आतंक बना रहे। बहुत से गाँवों को तोपों से उड़ा दिया।

अंग्रेज बड़े चालाक थे। 1857 के संग्राम के बाद अंग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमानों के बीच फूट डालनी प्रारम्भ की, जिससे कि ये दोनों कौम सदा लड़ती रहे तथा अंग्रेजों का राज्य सदा अक्षुण्ण बना रहे। अंग्रेजों ने 'सर सैय्यद अहमद' को मुख्य रूप से मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाने के लिए हथियार बनाया। सन् 1883 में अंग्रेजों ने 'मोहम्मडन पोलिटिकल एसोसिएशन' बनाई। सर सैय्यद अहमद इसका सैक्रेट्री बना। अलीगढ़ में एक मुस्लिम स्कूल खोला गया। बाद में जिसको कॉलेज बना दिया गया। आजकल यह संस्था 'अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी' कहलाती है। इस कॉलेज का प्रिंसिपल मि० बैक था। इसी मि० बैक ने सर सैय्यद अहमद को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काया।

अंग्रेजों ने एक और योजना बनाई तथा भारतीयों के पूर्वजों को नीच, असभ्य सिद्ध करने के लिए इतिहास तथा पाठ्यक्रम बदल दिया तथा इन्हीं अंग्रेज भक्त लोगों को सरकारी नौकरियों में लिया जाने लगा। इसके अतिरिक्त एक अंग्रेज 'डॉ० एलन आक्टोवियन ह्यूम' ने जो 1857 के विद्रोह के समय उत्तर प्रदेश के किसी जिले का उपायुक्त था तथा जो क्रान्तिकारियों के घेरे में से स्त्री का वेश बनाकर बच सका था, ने लार्ड डफरिन की सहायता से 18.12.1885 में कांग्रेस की स्थापना की, जिससे अंग्रेजी पढ़े लोगों से संपर्क बना रहे तथा भारत में फिर विद्रोह न पनप सके। शुरू में कांग्रेस में वही लोग सम्मिलित होते थे जो अंग्रेजी पढ़े हों तथा अंग्रेज भक्त हों। उन दिनों जब भी कांग्रेस का अधिवेशन होता तो अंग्रेजों की प्रशंसा के गीत गाये जाते थे। जब बाद में कांग्रेस में नेताजी, लोकमान्य तिलक तथा आर्यसमाजी आदि सम्मिलित हो गये, तब लाचारी में पूर्व स्वतन्त्रता की मांग कांग्रेस को अपने अधिवेशन में करनी पड़ी।

सन् 1915 में गांधी जी के भारत आगमन के कुछ समय बाद ही गरम दल के नेता श्री बालगंगाधर तिलक का निधन हो गया तथा कांग्रेस पर गान्धी जी का पूर्ण अधिकार हो गया तथा उनके सारे जीवन तक रहा। गान्धी जी ने गरम दल के कांग्रेसियों को दल से बाहर कर दिया और कांग्रेस में केवल अंग्रेजों से सहानुभूति रखने वाले नरम दल वाले ही शेष रह गये। अंग्रेज में अन्त में इन्हीं को राज हस्तान्तरित करके गये।

मुसलमानों में एक आगा खां नामक व्यक्ति था, जो खोजा सम्प्रदाय का गुरु था। इसके सम्प्रदाय के लोग इसके स्नान किये हुए पानी को पवित्र मानकर पीते थे। इसके ऊपर बड़ी मात्रा में चढ़ावा भी आता था। इस आगा खां के नेतृत्व में 30 के लगभग प्रमुख मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मण्डल 1.10.1906 को शिमला में लार्ड डफरिन से मिला तथा इन लोगों ने मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन मण्डल तथा नौकरियों में आरक्षण की मांग रखी। सन् 1909 में मुसलमानों को अलग सम्प्रदाय मानते हुए उन्हें अलग निर्वाचन मण्डल, अलग चुनाव क्षेत्र तथा नौकरियों में आरक्षण दे दिया गया।

'सारे जहाँ से अच्छा' गीत का लेखक 'मुहम्मद इकबाल' पहले देशभक्त था किन्तु 1905 के बाद वह कट्टर मुसलमान बन गया तथा वही व्यक्ति वैचारिक रूप से पाकिस्तान का जनक बना। इस व्यक्ति ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को पलीता लगाया। दूसरा एक मुसलमान चौ० रहमत अली था। इसी व्यक्ति ने पाकिस्तान शब्द तथा पाकिस्तान का नक्शा बनाया तथा 1933 ई० में 'पाकिस्तान नेशनल मूवमेंट' की स्थापना की। उसने पाकिस्तान शब्द की रचना इस प्रकार की-(प) से पंजाब, (अ) से अफगानिस्तान, (क) से कश्मीर, (स) से सिन्ध, (तान) से बलूचिस्तान।

22.12.1939 ई० को मुस्लिम लीग ने कलकत्ता में 'हिन्दू मुक्ति दिवस' मनाया। वहां का मुख्यमन्त्री 'सुहरावर्दी'

था। उसकी देखरेख में सारे सरकारी मुसलमान अधिकारी तथा पुलिस ने कलकत्ता के हिन्दुओं पर हमला बोल दिया जिसमें हजारों हिन्दुओं की हत्या, स्त्रियों का अपहरण तथा बलात्कार हुए। यह पाकिस्तान बनाने की गुंडागर्दी का पूर्वाभ्यास था। इसी सुहरावर्दी को गान्धी जी ने भाई बताया तथा शहीद की संज्ञा दी। गान्धी जी ने आपदग्रस्त हिन्दुओं के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई।

इस समय पाकिस्तान बनना लगभग तय हो गया था, क्योंकि मुस्लिम लीग ने लाहौर अधिवेशन 1940 में पाकिस्तान बनाने का प्रस्ताव पास कर दिया था। अत: बंटवारे के लिए लन्दन से एक कैबिनेट मिशन भारत आया। इस मिशन ने भारत की अलग-अलग पार्टियों से बातचीत करके बंटवारे की घोषणा कर दी। स्मरण रहे कि इस मिशन के सामने डॉ० अम्बेडकर ने दलितों के लिए अलग देश की मांग की थी। किन्तु श्री जगजीवनराम ने तथा श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने अम्बेडकर की इस मांग का विरोध कर भारत में ही रहने की इच्छा प्रकट की थी। बंटवारे की इस योजना की कांग्रेस तथा लीग दोनों ने स्वीकृति दे दी।

उस समय इंग्लैण्ड में टोनी (टोरी) कंजर नेटिव पार्टी की पराजय हुई थी तथा लेबर पार्टी विजयी हुई थी। यह पार्टी भारत को स्वतन्त्र करने की पक्षधर थी। दूसरा, द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण अंग्रेजों की स्थिति अत्यन्त कमजोर हो गई थी, तीसरा आजाद हिन्द सेना के आत्मसमर्पण के कारण भारतीय सेना आजाद हिन्द सेना के सम्पर्क में आई तथा भारत की जल-थल-नभ तीनों सेवाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। अत: इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री श्री एटली ने अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ने की घोषणा कर दी। उसी समय लार्ड वेवल वापिस इंग्लैण्ड चला गया तथा लार्ड माउण्ट वेटन भारत आया। लार्ड क्लाईव 1758 ई० में भारत में प्रथम वायसराय आया था तथा माउण्ट वेटन अन्तिम चौतीसवां वायसराय था। माउण्ट वेटन विक्टोरिया का पड़पोता था। यही बंटवारे को कार्यरूप देने वाला था। 3 जून, 1947 को विभाजन की घोषणा कर दी गई। 14.06.1947 को गान्धी जी ने कांग्रेस कार्य समिति में बंटवारे के समर्थन में 40 मिनट भाषण दिया। स्मरण रहे यही गान्धी जी कहते थे कि बंटवारा मेरी लाश पर होगा। किन्तु नेहरू जी की स्वीकृति के साथ ही उन्होंने चुपचाप बंटवारा स्वीकार कर लिया। बंटवारे में भारत के मुसलमान पाकिस्तान जाने थे तथा पाकिस्तान के हिन्दू भारत आने थे। जिन्ना इस काम को आपसी तालमेल से करना चाहता था। किन्तु बंटवारे का समर्थन करते हुए भी गान्धी जी ने दोनों तरफ के लोगों से अपील की कि चाहे वे मर जायें किन्तु अपने-अपने स्थान को न छोड़ें। यह अपील गांधी जी ने मौलाना आजाद के कहने पर की थी। तब जिन्ना ने सीधी कार्यवाही 'डायरेक्ट एक्शन' शुरू कर दिया जिसमें बीस लाख हिन्दू-मुसलमान मारे गये। जिन्ना पाकिस्तान का राष्ट्रपति बना तथा भारत का राष्टपति (गवर्नर जनरल) नेहरू ने लार्ड माउण्ट वेटन को ही रहने दिया। इस पद का दुरुपयोग करते हुए माउण्ट वेटन ने भारत को कई हानि पहुँचाई, जिसमें नेहरू को आगे करके कश्मीर समस्या खड़ी करना भी है। जिन्ना ने जोधपुर तथा जैसलमेर को पाकिस्तान में मिलाने का बड़ा प्रयत्न किया तथा इन राज्यों को कई लोभ भी दिखाए।

'चाऊ चिन्लेक' उस समय भारत का प्रधान सेनापति था। यह 1.12.1947 को पदमुक्त हुआ। 17.8.1947 ई० ब्रिटिश सेना ने भारत को छोड़ना शुरू किया। 28.2.1948 को 'सौमर सैट शायर' की अन्तिम टुकड़ी भारत से चली गई। क्षेत्र बंटवारे का चेयरमैन 'सिटिलरैडक्लिप' था। इसी ने बंटवारे की सीमा रेखा खींची थी। नेहरू भारत का प्रथम प्रधानमन्त्री बना तथा लियाकत अली खां पाक का प्रधानमन्त्री बना।

स्मरण रहे कि मोहम्मद अली जिन्ना एक राष्ट्रवादी मुसलमान था। यह कट्टरपन्थी नहीं था। अंग्रेजियत तथा फैशन का शौकीन था। अपने पन्थ को प्रमुख आगा खां को भी महत्त्व नहीं देता था। शराब भी पीता था। सन् 1920 तक यह कांग्रेसी ही था। लोकमान्य तिलक का मुकदमा भी इसी ने लड़ा था। इसने कभी भी हिन्दुओं पर कटु टिप्पणी नहीं की थी। किन्तु जब 1920 के बाद गान्धी जी ने खिलाफत आन्दोलन के समय कट्टरपंथी मुसलमानों को कांग्रेस में महत्त्व दिया तथा मोहम्मद अली जिन्ना तथा लियाकत अली को कांग्रेस अध्यक्ष बनाया, तब जिन्ना ने गान्धी जी को सावधान किया तथा कहा इसके बुरे परिणाम होंगे। किन्तु गान्धी जी नहीं माने तथा कट्टरपन्थियों को महत्त्व देते रहे। इससे कट्टरपंथियों की हिम्मत बढ़ गई तथा इसी कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा महाशय राजपाल जी की हत्या हुई।

जिन्ना ने गान्धी जी की इस मनमानी के विरुद्ध कांग्रेस छोड़ दी तथा अलग पार्टी 'मुस्लिम लीग' बना ली। अन्त में अंग्रेजों की दुरभि सन्धि तथा नेहरू जी की राज्यप्राप्ति की जल्दबाजी के कारण भारत का बंटवारा हुआ।

स्मरण रहे कि कई मुसलमान नेता-मौलाना आजाद तथा सीमान्त गान्धी आदि भी इस बंटवारे के विरोध में थे। किन्तु

शेष पृष्ठ 14 पर....

प्रचलित तीनों वादों (विचारों) की संक्षिप्त व्याख्या

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

ईश्वर ने जब से सृष्टि रची है तब से आज तक तीन सत्ताएँ ही अनादि व अनन्त मानी जाती हैं, जिसमें पहली

ईश्वर चेतन सत्ता, दूसरी है जीव चेतन सत्ता और तीसरी है प्रकृति जड़सत्ता। ईश्वर ने जीव के लिए प्रकृति द्वारा यह सृष्टि रची जिसकी अवधि चार अरब 32 करोड़ है। इसमें जीव अपने कर्मानुसार अनेक योनियों पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पति आदि सभी भोग योनि हैं। केवल मनुष्य योनि ही एक भोग तथा कर्म योनि है। इसी योनि में मनुष्य यदि अपने जीवन भर शुभकर्म यानि परोपकार के कर्म करे तो उसको मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त हो जाता है। महर्षि जी के आने से पहले मोक्ष की कोई अवधि नहीं थी। वह हमेशा के लिए ईश्वर के सान्निध्य में परम आनन्द की अनुभूति करते हुए सदा के लिए मोक्ष का आनन्द लेता रहेगा, ऐसी धारणा थी परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर मोक्ष की भी अवधि निर्धारित की है। उनका मानना है कि मोक्ष किन्हीं शुभकर्मों का फल है। यदि शुभकर्म करने की यदि कोई अवधि है तो फल की भी अवधि होनी निश्चित है, चाहे वह कितनी भी बड़ी या छोटी हो, अवधि अवश्य होगी। महर्षि जी ने वेदों से जानकर मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब की बताई है। इसलिए मोक्ष पाने वाली जीवात्मा इतनी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में परम आनन्द की प्राप्ति करती रहेगी। फिर पुन: धरती पर ईश्वर की न्यायव्यवस्था के अनुसार आना ही पड़ेगा। यदि मनुष्य योनि से जीव मोक्ष में नहीं जाता है तो उसकी दो गतियाँ और हैं। पहली गति यदि उसने मनुष्य जीवन में 50% या इससे अधिक शुभकर्म किये हैं तो वह पुन: शुभकर्मों के प्रतिशत के हिसाब से ही मनुष्य योनि में जायेगा यानि जितने शुभकर्म बढ़ते जायेंगे, उतनी ही मनुष्य योनि अच्छी मिलती जायेगी। यदि मनुष्य जीवन में 50% से शुभकर्म कम और बुरे कर्म अधिक किये हैं तो उसको कर्मों के हिसाब से पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, कीड़े-मकौड़े तथा वनस्पति की हल्की भोग योनि मिलती जाएगी। मनुष्य योनि में मनुष्य तीन किस्म के वाद (विचार) रखता है, जिसके अनुसार उन विचारों को मान्यता देते हुए अपना जीवन चलाता है। वे तीन किस्म के विचार (वाद) हैं-(1) त्रैतवाद, (2) द्वैतवाद, (3) अद्वैतवाद। इन तीनों की अलग-अलग व्याख्या इसी भांति है-

(1) **त्रैतवाद**-सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत से भी आगे तक त्रैतवाद जो वेदों के अनुसार है, इसकी मान्यता रही। त्रैतवाद में ईश्वर, जीव और प्रकृति तीन को आदि व अनन्त सत्ताएँ मानी जाती हैं, परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध में अधिकतर वैदिक विद्वान्, आचार्य, वीर, बलवान, योद्धा व बुद्धिमान् मृत्यु को प्राप्त हो गये जिससे वेदों का पढ़ना-पढ़ाना प्राय: लुप्त हो गया और कम विद्वान् भी विद्वान् समझे जाने लगे। उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अनेक मत-मतान्तर चला दिये जिसमें सभी लोग फँसकर वेदज्ञान से भटक गये तब से अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया और अनेक वेदविरुद्ध प्रथाएँ जैसे मूर्तिपूजा, श्राद्ध, अवतारवाद, तीर्थ भ्रमण आदि अनेक मत-मतान्तर चल पड़े, जिससे लोग कर्त्तव्य भाव से कार्य करना छोड़ अपने स्वार्थ के लिए काम करने लगे। इससे केवल भारतवासियों का ही नहीं बल्कि विश्व के लोगों का चारित्रिक पतन होने लगा। ईश्वर की अपार कृपा से 12 फरवरी 1824 में महर्षि देवदयानन्द का जन्म हुआ और उन्होंने 1860 से 1863 तक सद्गुरु स्वामी विरजानन्द की गोद में बैठकर वेदों के मंत्रों का सही अर्थ करना सीखा और वेदों के आधार पर त्रैतवाद का पुन: प्रचलन किया और द्वैतवाद व अद्वैतवाद वालों को शास्त्रार्थ में पराजित करके त्रैतवाद की पुन: स्थापना की।

(2) **द्वैतवाद**-महाभारत के बाद 2500 वर्षों तक त्रैतवाद ही चलता रहा बाद में मूर्ख और स्वार्थी पण्डितों ने वेदों के मन्त्रों का अर्थ सही न लगाकर गलत अर्थ लगाने आरम्भ कर दिये जिससे उन्होंने यज्ञों में पशुबलि देना आरम्भ कर दिया। उसी समय महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ। वे अहिंसावादी व दयावान व्यक्ति थे। उनसे यज्ञों में पशुबलि होते हुए नहीं देखा गया। उसने यज्ञ करने वाले पण्डितों से पूछा कि आप यज्ञों में पशुबलि क्यों देते हो? उन्होंने कहा कि पशुबलि देना वेदों में लिखा है, तब महात्मा बुद्ध ने कहा कि मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता जिसमें पशुबलि देना लिखा हो। तब पण्डितों ने कहा कि वेद तो ईश्वर के बनाए

हुए हैं, तब बुद्ध ने कहा कि जो ईश्वर जीव हिंसा को ठीक मानता है, मैं ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानता। तब महात्मा बुद्ध ने अपना बौद्धधर्म अलग चलाया जिसमें केवल जीव और प्रकृति को माना, ईश्वर की सत्ता को नहीं माना। उसने कहा सृष्टि स्वयं बनती और स्वयं ही नष्ट होती है। इसको बनाने वाला कोई नहीं है। जीव के किए हुए कर्मों का फल प्रकृति ही देती है। इसमें ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं। इसके बाद महावीर स्वामी आये उन्होंने भी अहिंसा के हिसाब से जैनधर्म चलाया। उन्होंने भी केवल जीव और प्रकृति की सत्ता को माना और ईश्वर की सत्ता को नहीं माना। बाद में इस युग में सोसलिस्ट व कम्युनिस्ट हुए। इन्होंने भी केवल जीव और प्रकृति की सत्ता को माना, ईश्वर की सत्ता को नहीं माना। इन दो सत्ताओं को मानने वालों को द्वैतवादी कहते हैं।

(3) अद्वैतवाद–करीब 2500 वर्ष पहले बौद्ध और जैन के समय में दक्षिण भारत में आदि शंकराचार्य पैदा हुए जो उपनिषदों, दर्शनों, ब्राह्मणग्रन्थों व स्मृतियों के प्रकाण्ड विद्वान् थे परन्तु वेदों तक उनकी पहुँच नहीं थी। इसलिए उन्होंने बौद्ध तथा जैनियों को परास्त करने के लिए अद्वैतवाद का प्रचलन किया जिसमें केवल एक ईश्वर की सत्ता को माना है। जीव को ईश्वर का अंश और प्रकृति को स्वप्नवत् माना है। यानि स्वप्न की कोई सत्ता नहीं होती उसी प्रकार प्रकृति की भी कोई सत्ता नहीं। सृष्टि केवल स्वप्नवत् है। इसकी कोई सत्ता नहीं। हालांकि यह मानना गलत है, परन्तु द्वैतवाद से तो अच्छा है इसलिए आदि शंकराचार्य ने बौद्धों व जैनियों को हराकर अद्वैतवाद को प्रचलित किया जो अभी तक भी चलता आ रहा है। मूर्तिपूजा भी उसी समय चलाई गई थी। कारण, जैनी मूर्तिपूजक थे। हिन्दू मूर्तिपूजा का सरल मार्ग देखकर जैनी बनते जा रहे थे, इसलिए हिन्दू पण्डितों ने सोचा कि हिन्दू यदि ऐसे ही जैनधर्म को अपनाते गये तो हिन्दू धर्म समाप्त हो जायेगा। इसलिए उन्होंने राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार बतलाकर उनकी पूजा करवानी आरम्भ कर दी, तभी से मूर्तिपूजा होनी आरम्भ हो गई जो वैदिक धर्म को समाप्त करने में काफी सहयोगी बनी। महर्षि दयानन्द ने आकर मूर्तिपूजा का खण्डन किया और मूर्तिपूजा को ईश्वर साक्षात्कार करने के लिए सीढ़ी न बतलाकर खाई बतलाया और मूर्तिपूजा का डटकर विरोध किया और वैदिक धर्म की स्थापना की जिससे त्रैतवाद की भी मान्यता हो गई।

आतंकवाद की खान..... पृष्ठ 6 का शेष.......

कोई धारा लगाए या हटाए हमें तो कोई आपत्ति नहीं फिर भारत के अन्दरुनी मामलों से पाकिस्तान को क्यों छटपटाहट हो रही है। यह उसकी कोरी मूर्खता है।

अपनी स्थिति देखे, अपनी बेरोजगारी देखे, भुखमरी को रोके, वहाँ की जनता को शिक्षित करे और देश की समस्याएँ देखे। अपनी जनता का ध्यान बंटाने भारत में आतंकवाद फैलाकर जनता को गुमराह न करे। अपनी आदत में सुधार लाए वरना सोच ले यह अर्जुन, कृष्ण, राम, गुरुगोविन्दसिंह, शिवाजी, प्रताप का भारत है। पाकिस्तान को लगातार पटखनी देता रहा है। यदि कोई हरकत की तो मिटा देगा धरती से, पाकिस्तान का नाम इतिहास में ही रह जाएगा।

अध्यापकों के लिए...... पृष्ठ 9 का शेष.....

से पास करके कल्पना चावला मेडिकल कॉलेज करनाल में प्रवेश लिया। प्रवेश लेने से पहले उसने कहा कि गुरु जी मुझे यज्ञोपवीत दे दो, कहीं मैं वहाँ बिगड़ न जाऊँ। यज्ञ करके उसे यज्ञोपवीत दिया गया। 'सत्यार्थप्रकाश' व आर्यसमाज की अच्छी जानकारी रखता है। इन प्रसंगों की एक पुस्तक बन सकती है। अपनी श्रेणी के अध्यापकों से यही निवेदन है कि बालकों को पढ़ाने में खूब मेहनत करें। इससे आत्मिक सुख मिलेगा। वह सुख निन्दा–चुगली, व्यर्थ की कथा, भड़कीले वस्त्र पहनना आदि विषयभोगों में नहीं मिल सकता। मैंने अपने 17 वर्ष के अध्यापक जीवन में अनेक अध्यापक ऐसे देखे हैं जो क्लर्क का कार्य करने, प्रबंधन का कार्य करने, बाहर जाने आदि व्यवस्थाओं में तो पूरी रुचि लेते हैं, लेकिन अपनी कक्षा में जाने से निरुत्साहित हो जाते हैं। मैं इन्हें कदापि आदर्श अध्यापक नहीं मानता। अपने बालकों को नियमित सदुपदेश न देने वाला आचार्य भी प्रतिष्ठा गँवा बैठता है। पढ़ने–पढ़ाने में कभी प्रमाद न करें। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि हे परमपिता! पद की प्रतिष्ठा भले ही छीन लेना, लेकिन पढ़ने–पढ़ाने का कार्य मत छीनना, इस कार्य के द्वार प्रभु! सदैव मेरे लिए खोले रखना।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

इन्द्रियों के व्रताचरण का महत्त्व

संसार में अच्छाई का जन्म प्रयत्न और परिश्रम से होता है और बुराई अपने आप पैदा होती है। किन्तु है वास्तविकता यही। ऐसा क्यों? इसका उत्तर कठोपनिषद् में आचार्य यम के उपदेश में है, आचार्य यम ने कहा-(कठ० 4/1)

'प्रभु ने इन्द्रियों की रचना बाहर की ओर की है, इसीलिए ये बाहर की ओर दौड़कर जाती हैं। आँख रूप पर, नाक गन्ध पर, जीभ रस पर, कान शब्द पर और त्वचा स्पर्श पर, अर्थात् अपने-अपने ग्राह्य विषय की ओर दौड़ने की इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है।' इनकी सार्थकता भी इसी में है। अत: सिद्ध हुआ कि आँख की सार्थकता रूप से और रूप की सार्थकता आँख से है। यदि रूप, रस और गन्धादि विषयों के आकर्षणों ने ही उलझाए रखा तो फिर पाप के फन्दे में ही पड़े रहेंगे।

कानों के कल्याणकारक वचन सुनना कानों का व्रत है और गन्दे अश्लील शब्द तथा निन्दा-श्रवण आदि में रस लेना कानों का पाश (बन्धन) है। इसी प्रकार आँख के अच्छे-पवित्र दृश्य देखना, ज्ञानवर्धक ग्रन्थों का अध्ययन, परस्त्री को माँ, बहन और बेटी की दृष्टि से देखना आँखों का व्रत है। वेद में कान और आँख-इन्द्रियों का उल्लेख ज्ञान-संग्रह में मुख्य होने के कारण कर दिया है, अन्यथा कुसंस्कार-जन्य विषय-लिप्सा तो नाक, जीभ और त्वचा की भी कम भयावह और हानिकर नहीं है। क्रीम-पाउडर, सुगन्धित तेलों और इत्रों की गन्ध, चम्पा, चमेली, मोतिया और रजनीगन्धा की खुशबू कामोन्माद की ओर ही व्यक्ति को धकेलती है। इसी प्रकार मनुष्य इतना तक भी नहीं सोच सकता कि मेरी जीभ का थोड़ी देर का चस्का किसी प्राणी की जीवन लीला को ही समाप्त कर देता है। हिंसा से बढ़कर कोई दूसरा पाप नहीं। इसी प्रकार त्वचा के स्पर्श से विषय का आकर्षण भी बहुत भयङ्कर है। सभी मैथुन इसी के क्षेत्र में आते हैं। किन्तु इन तीनों ज्ञानेन्द्रियों की विषय-ज्वाला को हवा देने वाली इन्द्रियाँ कान और आँख ही हैं। इसलिए वेद में कहा गया है। कानों से यदि भद्र ही सुनें तो अश्लील विचार और तज्जन्य व्यभिचार को अवकाश ही कहाँ है? आँखें यदि भद्र ही देखें तो मार्ग में पाप की ठोकर कहाँ लग सकती है? इन नियमों के आचरण से राष्ट्र में नैतिकता और मानवता के उच्चतम धरातल पर समाज का आचार-व्यवहार स्थापित होता है।

-जगरूपसिंह छिक्कारा आर्य, म.नं. बी. 103 फ्लोवर 10, स्पेज परिवी सेक्टर-72, गुरुग्राम-122001 (हरयाणा)

प्रेरक वचन

- अक्सर परेशानियों की वजह हम स्वयं होते हैं।
- आलोचना भी सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है।

- बड़े दायित्व के साथ जिम्मेदारी का भी अहसास होना चाहिए।
- विद्वत्ता के साथ विनम्रता स्वयं आती है।
- सभी चीजें आसान बनने से पहले मुश्किल होती है।
- व्यवहार में आये बिना बड़े से बड़ा विचार भी व्यर्थ हैं।
- कृतज्ञता व्यक्त करने में कंजूसी नहीं दिखानी चाहिए।
- शिक्षा सशक्तिकरण का सबसे सशक्त माध्यम है।
- सतर्कता बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी संतान है।
- अवसर परिस्थितियों का ही परिणाम है।
- विनम्रता से हार स्वीकार करना भी एक गुण है।
- दुश्मन पर वार से बेहतर है कि उसे अवसर ही न दिया जाए।

-भलेराम आर्य गांव-सांघी (रोहतक)

भारत-विभाजन (1947)... पृष्ठ 11 का शेष.....

गान्धी-नेहरू के सामने उनकी नहीं चली। खान ने तो कहा था कि तुमने हमें भेड़ियों के हाथों में सौंप दिया। अब्दुल गफ्फार खाँ करांची के थे। उनकी अलग पार्टी 'खुदाखिदमदगार' थी। पाकिस्तान बनने के बाद खान साहब कई वर्ष जेल में रहे।

स्मरण रहे कि जिन्ना को हृदय या पेट सम्बन्धी कैंसर आदि कोई घातक रोग था जिसके चलते उसकी मृत्यु 6-7 महीने के अन्दर हो जानी थी। इस बात का केवल अंग्रेजों को पता था। अत: अंग्रेज बंटवारे की जल्दी में थे, क्योंकि जिन्ना की मृत्यु के बाद बंटवारा आसान न था। यदि नेहरू जी कुछ दिन बंटवारे की जल्दी न करते तो सम्भवत: बंटवारा टल जाता। इस प्रकार धूर्त अंग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमानों में फूट डाली तथा नेहरू जी की सहमति के कारण भारत विभाजन हो गया। अंग्रेजों की इच्छा पूर्ण हुई। बंटवारे से बना पाकिस्तान पिछले 73 वर्ष से सिरदर्द बना हुआ है।

नोट-लेख की अधिकतर बातें 'भारत विभाजन' लेखक-प्रियंवद से उद्धृत हैं।

सम्पर्क-111/19 आर्यनगर झज्जर मो० 9996227377

प्रेरणास्रोत भजन

(1)

किसी ने बाइबिल किसी ने कुरान पै ही,
आँख मींच के इमान लाओ ये सुझाव था।
किसी ने पुराण भागवत किसी ने 'प्रकाश',
धर्मग्रन्थ हनुमान चालीसा बताया था।
किसी ने केवल ज्ञान किसी ने केवल कर्म,
किसी ने केवल ढोल भक्ति का बजाया था।
किन्तु ऋषि दयानन्द जी ने वेद द्वारा ज्ञान,
कर्म भगती तीनों का महत्त्व दर्शाया था।

(2)

पाला ब्रह्मचर्यव्रत वीर हनुमान ने था,
अपने आराध्यदेव राम के रिझाने को।
सुनते हैं पाला ब्रह्मचर्य परशुराम ने था,
आततायी क्षत्रिय समाज के नशाने को।
पाला ब्रह्मचर्य भीष्मपितामह ने 'प्रकाश',
पूज्य पिता शान्तनु को सुखिया बनाने को।
किन्तु पाला ब्रह्मचर्य देव दयानन्द ने था,
कोटि-कोटि मानवों के संकट मिटाने को॥

(3) वैदिक उजियारा हो जाये

सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना, यदि जन-जन में प्यारा हो जाये।
पढ़ करके सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जाये॥
फूले फुलवाड़ी वेदों की, जग से अन्धियारा मिट जाये।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जग बन जाये॥

(4) अमर रहे सत्यार्थप्रकाश

कोटि-कोटि जग का आश, अमर रहे सत्यार्थ प्रकाश।
जीवन ज्योति जगाने वाला, प्रेम पीयूष पिलाने वाला।
सुख-सन्मार्ग सुझानेवाला, पापभावना का करे विनाश॥
सत्य-सनातन धर्म सिखाता, भेदभाव भ्रम दूर भगाता।
प्रभु पद प्रेम प्रीति उपजाता, दूर भगाता भव-भय त्रास॥
वैदिक नाद बजाया इसने, बुद्धिवाद युग लाया इसने।
ढोंग दुर्ग का ढाया इसने, पाखण्डी हो गये उदास॥
परमेश्वर का गुणगान इसमें, सृष्टिक्रम विज्ञान इसमें।
सत्य-असत्य पहचान इसमें, मानवता का पूर्ण विश्वास॥
आर्यजनों की शान यही है, जीवन धन और प्राण यही है।
धर्म कर्म ईमान यही है, सह न सकें इसका उपहास॥
इसकी शान न जाने देंगे, इस में आँच न आने देंगे।
जाये जान तो जाने देंगे, 'इन्द्र' न होगा इसका ह्रास॥

(5)

बतायें दयानन्द क्यों जग में आया,
सुनो लाभ क्या, इससे भारत ने पाया।
किया फिर से प्राचीन गौरव को जाग्रत,
सकल जग में वेदों का डंका बजाया।
गये भूल थे नाम तक भी अपना,
ऋषि ने हमें आर्य कहना सिखाया।
मिटाई सभी कायरता हिन्दुओं की,
सुदृढ़, वीर, निर्भीक फिर से बनाया।
समझे थे हिन्दू धर्म अपना कच्चा,
दयानन्द ने आके पक्का बताया।
पाखण्डी विरोधी उठे कांप डर से,
सच्चाई का नाद जब उसने बजाया।
किरानी कुरानी पौराणिक मठों पर,
लगातार तर्कों का गोला गराया।
मसीहा और मुस्लिम यह समझे ऋषि को,
सजा हम को देने खुदाबन्द आया।
सभी सत्य-प्रेमियों ने कहा यह,
सुख-शान्तिदायक यह सन्देश लाया।

(6)

चाहो यदि लेना आप जग में सच्चा,
परम पुनीत प्रभु भक्ति मकरन्द का।
चाहो तरना जो अघ, अविद्या-अगम सिन्ध,
चाहो करना विनाश दुःख-दैन्य फन्द का।
चाहो भरना जो सत्य ज्ञान से हृदय कोष,
चाहो भाण्डा फोड़ना पाखण्ड छलछन्द का।
चाहो करना निवृत्ति शंकाओं की तो अवश्य,
पढ़ो सत्यार्थ-प्रकाश ऋषि दयानन्द का।

(7) सत्यार्थप्रकाश महिमा

सत्यार्थप्रकाश में लिखा, सदा सत्य का सार।
जो सज्जन पढ़ते इसे, होते सुखी अपार॥
ब्रह्मचर्य पालक सदा, दयानन्द ऋषिराज।
लिखा सत्यार्थप्रकाश जो, सब ग्रन्थों का ताज॥
दयानन्द महापुरुष थे, किया श्रेष्ठतम काम।
वैदिक अमृत पान का, पिलागया जो जाम॥
दयानन्द मुनिराज थे, साधक बड़े महान्।
'केवल' विनती यूं करे, पढ़ियो वैदिक ज्ञान॥

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना (सोनीपत)

मेवात में लवजिहाद, धर्म-परिवर्तन एवं गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाए

हरयाणा के मेवात क्षेत्र में, लवजिहाद, धर्म परिवर्तन, गौहत्या के अनेक मामले सामने आ रहे हैं, कोई दिन ऐसा नहीं जब गोहत्या के मामले ना पकड़े जाते हों।

ता० 25 अगस्त 2019 को फिरोजपुर झिरका (मेवात) में एक विशाल महापंचायत को आयोजन संघर्ष समिति के प्रधान श्री अर्जुनदेव चावला की अध्यक्षता में हुई, जिसमें लगभग 10 हजार व्यक्ति, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के हिन्दू संगठनों के, आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल, आर.एस.एस., शिवसेना जैनसमाज, सनातन धर्म एंव सर्वखाप पाल के लोगों ने हिस्सा लिया, लोगों ने भारी रोष व्यक्त करते हुये मांग की कि फिरोजपुर झिरका मेवात से हिन्दू लड़की को अगवा कर धर्म बदलकर निकाह करने के प्रयासरत उस लड़की को तुरन्त उसके माता-पिता को सौंपा जाये अन्यथा यह आन्दोलन, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश एवं हरियाणा के अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप ले लेगा, सभी संगठनों ने पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री रामपाल आर्य, उपप्रधान कन्हैयालाल आर्य, आर्य वेदप्रचार मंडल के प्रधान सुभाष सिंगला, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान लक्ष्मण पाहूजा आदि ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। 54 खापों के चौधरी अरुण जेलदार ने लड़की को तुरन्त उसके माता-पिता को सौंपकर भाईचारा को कायम रखने की आपील की तथा इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिये श्री अरुण जेलदार की अध्यक्षता में 15 सदस्यों की कमेटी गठन करके मुख्यमंत्री हरयाणा से मिलकर क्षेत्र में उत्पन्न स्थिति से अवगत कराने का निर्यण लिया तथा हिमाचल प्रदेश की सरकार की तरह धर्मान्तरण पर रोक लगाने एवं लव जिहाद को रोकने के लिये सख्त कानून बनाने तथा मेवात के हिन्दुओं को अल्प सख्यक घोषित करने की माँग भी की जाये।

जानकारी के लिये बता दें, मेवात में लव जिहाद व धर्म परिर्वतन के अनेक मामले हैं। इसी माह में लव जिहाद के हिन्दू की तीन लड़की को बचाने मे सफलता पाई है। इस फिरोजपुर झिरका की हिन्दू लड़की को लेकर फिरोजपुर झिरका का सम्पूर्ण बजार तीन-चार दिन बंद रहा तथा महा पंचायत करके रोष प्रकट किया गया।

—पदमचन्द आर्य, पूर्व प्रधान आर्य वेदप्रचार मंडल (मेवात) 9868055362

14 सितंबर हिंदी दिवस पर गीत

हमारे राष्ट्र की भाषा, हमारे मन की अभिलाषा।
इसी से एकता अपनी, इसी से हमको है आशा॥
इसी से एकता अपनी...... ॥ टेक ॥

हमारी भावनाओं को, उचित अभिव्यक्ति देती है।
हमारी कल्पनाओं के, परों को शक्ति देती है॥
हमें अवगत कराती है, हमारी संस्कृति से ये।
ज्ञान की खोलती निधियां, जगाती विस्मृति से ये॥
ये मां के प्यार की भाषा , है यह श्रृंगार की भाषा।
इसी से एकता अपनी...... ॥ 1 ॥

चीन जापान जर्मन फ्रांस, अपनी भाषा से उभरे।
बिना अंग्रेजी माध्यम के, हुए विकसित स्वयं निखरे॥
परन्तु देश में अपने, ना स्वाभिमान जागा है।
राज करती है अंग्रेजी, भले अंग्रेज भागा है॥
करें प्रयोग हिंदी का ,बने सम्मान की भाषा।
इसी से एकता अपनी....... ॥ 2 ॥

हमारे देश की प्रतिभा, दबी अंग्रेजी के नीचे।
ये खिलकर मुस्कुराएगी, इसे हिंदी से हम सींचें॥
हमारे देश की सरकार, को भी सोचना होगा।
है हिंदी अभ्युदय का मार्ग, इसको खोलना होगा॥
हमारे मूल चिंतन का, करे विस्तार है भाषा।
इसी से एकता अपनी......... ॥ 3 ॥

—अंकुर 'आनंद', 1591/21, आदर्श नगर, रोहतक, मोबाइल- 9416203627

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के वर्ष 15 अंक 12 अगस्त द्वितीय अंक में अन्दर के प्रत्येक पेज पर 'जुलाई (प्रथम) 2019' भूलवश छप गया है। कृपया पाठक इसे 'अगस्त (द्वितीय) 2019' ऐसा पढ़ें। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। —सम्पादक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज महेन्द्रगढ़	21 से 22 सित० 19
2.	आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ़)	22 से 23 सित० 19
3.	आर्यसमाज जलियावास (रेवाड़ी)	5 से 6 अक्तू० 19
4.	आर्यसमाज लुहाना (रेवाड़ी)	19 से 20 अक्तू० 19

—रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

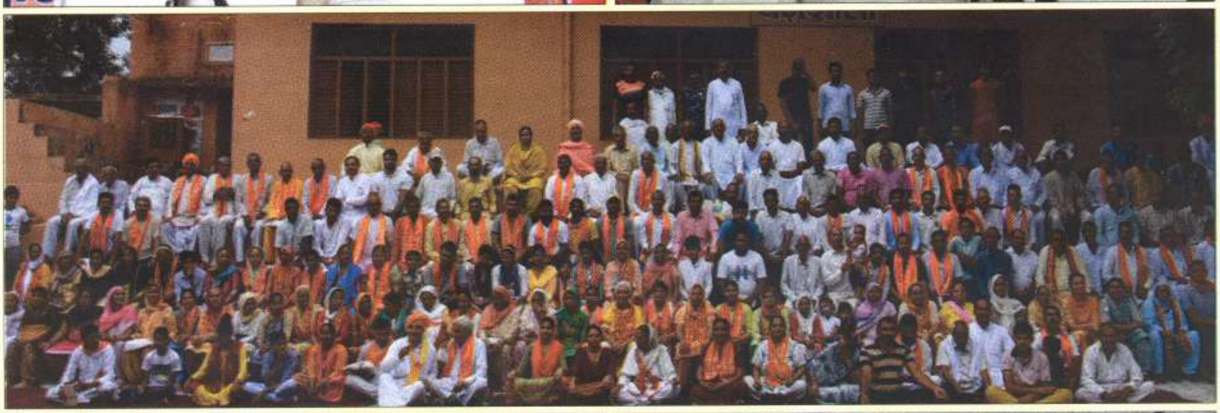

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय यज्ञ प्रशिक्षण एवं क्रियात्मक शिविर के समापन की झलकियां।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा